कार्ल मार्क्स

मार्क्स का अलगाव का सिद्धांत — उपर्युक्त उद्धरण से पता चलता है कि मार्क्स के लिए सम्पत्ति की प्राप्ति व्यक्ति के उद्देश्य की सिद्धि नहीं है अपितु संपत्ति का निषेध उसके लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक है। इसलिए न केवल संपत्तिहीन (श्रमिक) अलगाव/अन्यदेशीय है अपितु वे भी अन्यदेशीय हैं जिनके पास संपत्ति है (अर्थात् पूँजीपति)। एक व्यक्ति के पास संपत्ति के होने से अनिवार्य रूप से दूसरे के पास संपत्ति के न होने की बात स्वाभाविक है। मार्क्स के मत में अलगाव की समस्या का समाधान सबके पास संपत्ति को सुनिश्चित करने से नहीं हो सकता। वह केवल संपत्ति से वास्तविक सभी रिश्तों को समाप्त करने से ही हो सकता है। इसलिए अलगाव के उन्मूलन के लिए पूँजीवाद को समाप्त करना पूर्व-आवश्यकता है। पूँजीवाद की परिभाषा में ही अलगाव अन्तर्निहित है।

मार्क्स के अनुसार, साम्यवाद न केवल निजी संपत्ति के उन्मूलन — सकारात्मक उन्मूलन के पक्ष में है बल्कि वह मानव के आत्म-अलगाव के उन्मूलन के भी पक्ष में है। इसलिए यह मनुष्य की अपनी ओर एक सामाजिक के रूप में

यानी वास्तव में मनुष्य के रूप में वापसी है। दूसरे, मार्क्स ने अपनी रचना 'द जर्मन आइडियोलॉजी' में कहा है कि अलगाव का मुख्य कारण क्रियाकलापों का निर्धारण है। जिसके कारण हम जिस वस्तु का भी उत्पादन करते हैं वह हमारे ऊपर एक वस्तुपरक शक्ति बन जाती है जो नियंत्रण से बाहर हो जाती है, वह हमारी अपेक्षाओं में रुकावट बन जाती है और अंततः हमारे आकलनों को बिगाड़ देती है। समाजवादी समाज में मनुष्य अलगाव से निस्तार पा जाएगा क्योंकि किसी के भी क्रियाकलापों का कोई एकमात्र क्षेत्र नहीं होगा और प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छानुसार किसी भी शाखा में प्रवीणता पा सकता है। वहाँ मेरे लिए यह संभव होगा कि मैं आज एक काम करूँ और कल दूसरा, मैं सुबह शिकार के लिए जा सकता हुँ और दोपहर को मछली पकड़ सकता हुँ, शाम को पशुपालन कर सकता हुँ रात के खाने के बाद आलोचना कर सकता हुँ। यानि मैं ऐसा कोई भी काम कर सकता हुँ जिससे मुझे खुशी मिले, चाहे मैं कभी शिकारी, मछुआरा, पशुपालक या समालोचक न रहा होऊँ।